द्वितीय अध्याय

साहित्य का पुनरावलोकन

द्वितीय अध्याय

साहित्य का पुनरावलोकन :-

साहित्य का पूनरावलोकन अध्ययनकर्ता के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण होता है। साहित्य पूनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है, इसके आधार पर अनुसंधान में गुणात्मक सुधार आने में महत्व होती है :

साहित्य पूनरावलोकन से निम्न लाभ होते है :-

1. पूर्व अनुसंधानो के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
2. सर्वेक्षण करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार किया जा चुका है उसकी पुनरावृत्ती से बचा जा सकता है।
3. सत्यपन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओ में करने की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त कारणो से साहित्य पुनरावलोकन का अनुसंधान में महत्व है।

2.8 भारत में हुए शोधकार्य :-

गोकुल नाथन (1971) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की प्रेरणा से संबंधित उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धी का अध्ययन किया।

न्यायदर्श में असम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत 294 लड़के और 89 लड़कियों को शामिल किया।

दुबे :- (1974) दुबे ने असम के आदिवासी महाविद्यालयीन विद्यार्थी की शैक्षिक आकांशा और व्यवसायिक आकांश का अध्ययन किया।

अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला – आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थीयो की व्यवसायिक आकांशा और शैक्षिक आकांश में कोई अन्तर नहीं है।

रामलखन निरंज (1974) – ने इफेक्ट्रस ऑफ सोशियों इकानोमिक बैक ग्राउण्ड ऑन एजुकेशनल अचीवमेन्ट ऑफ 8वी क्लास स्टूडेन्ट ऑफ इन्टरमिडीएट कॉलेज ऑफ आर आयई शीर्षक के अंतर्गत अपना लघुरोध सम्पन्न किया। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे :–

1) बालको की शैक्षिक उपलब्धी उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है।

2) बालको की शैक्षिक उपलब्धी का माता–पिता की शिक्षा से घनिष्ठ संबंध होता है। जिन बालको के माता–पिता उच्च शिक्षित होते है उनकी शैक्षिक उपलब्धी उच्च होती है।

3) अभिभावकों के वेतन का संबंध भी बालको के शैक्षिक उपलब्धि से होता है उच्च वेतन पाने वाले माता–पिता के बालको की शैक्षिक उपलब्धी उच्च होती है।

4) बालको की शैक्षिक उपलब्धी अभिभावको के वेतन की अपेक्षा उनकी शिक्षा से अधिक प्रभावित होती है।

सचिदानन्द (1974) – आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थी कि व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए। विद्यालय में पढ़ने वाले आदिवासी विद्यार्थीयो की व्यवसायीक आंकाक्षा, गैर आदिवासी विद्यार्थीयों की व्यवसायिक आकांक्षा से कम थी।

लिंगडोह (1976) :-

लिंगडोह ने महाविद्यालय में अध्ययनरत आदिवासी तथा गैर आदिवासी बालक-बालिकाओं की उपलब्धी अभिप्रेरणा व्यवसायिक आंकाक्षा और परिवार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया ।

अध्ययन में आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धी में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थीयो की व्यवसायिक आकांक्षा 0.01 स्तर पर अंतर पाया।

शुक्ला : (1984) - इन्होने ''अचेवमेंट ऑफ प्रायमरी स्कूल चिल्ड्रन इन रिलेशन टू देयर सोशियो-इकानोमिक स्टेट्स एण्ड फेमिली साइज'' के अंतर्गत बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अपना शोधकार्य सम्पन्न किया।

अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :-

1. सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धी से धनात्मक एवं सार्थक रूप से संबंधित है।
2. कक्षा 5^{th} स्तर में अध्ययनतर ऐसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी उच्चार्थी जो अपेक्षाकृत छोटे आकार के परिवार के सदस्य थे।

चांद जे (1985) - ने विभिन्न नागा आदिवासियों विद्यार्थीयो का उनके आत्मबोध सामाजिक आर्थिक स्तर व्यवसायीक एवं शैक्षिक आकांशा और शैक्षिक उपलब्धी के संदर्भ में अध्ययन किया।

लखोबा (1986) प्रभालचंद्र (1989) :-

इन्होने आदिवासी क्षेत्र के समस्या एवं रूचियों का अध्ययन किया। आदिवासी को उपलब्ध शैक्षिक अवसरो का अध्ययन किया लखोबा के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आदिवासी छात्राओं की तुलना में गृह कार्य करने में अधिक समस्य होती है। तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का अध्ययन के साथ अच्छा सामज्यस्य है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धी में

कमी का मुख्या कारण इनके शिक्षा के पिछड़ेपन, पालकों की शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टीकोण और प्रेरणा की कमी है।

अमीरजन (1987) - आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थीयो की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक, अध्ययन किया। शोध के निम्नलिखित निष्कर्ष थे।

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थीयों कि शैक्षिक आंकाक्षा ने सार्थक अंतर पाया गया।
2. आदिवासी विद्यार्थी कि शैक्षिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा से कम थी।

अमरिजन (1987) :- आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक, अध्ययन किया। शोध के निम्नलिखित निष्कर्ष थे।

मनगत डी (1988) - इन्होंने व्यवसायीक परिवक्तता का बुद्धिमत्ता, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धी के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया मनगत डी ने अपने शोध कार्य में उपरोक्त चरो के मध्य सह-संबंध पाया।

गुप्ता बी. एस. (1988) :- अनुसूचित जनजाति एवं अनु.जाति के विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धी का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध में यह पाया गया की-श्रेणीबद्ध और समुह में गैर अनुसूचित जाति के छात्रों का निष्पादन अनुसूचित जाति के छात्रों से अधिक है। अनुसूचित जाति जनजाति एवं पिछड़े वर्ग के छात्रो का निष्पादन छात्राओं की तुलना में कम है।

गैर (1990) :- ने आदिवासी छात्रो को विभिन्न उपलब्ध सुविधाओं कि उपलब्धी और उसके उपयोग का राजस्थान के आदिवासी पर अध्ययन

किया अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि उपलब्ध पाठ्यक्रम का परम्परागत व्यवसाय का कोई संबंध नहीं है। आदिवासी छात्र उपलब्ध सुविधाओं का केवल दो तिहाई तथा छात्राऐं एक तिहाई लाभ उठाती है।

अचाले सखाराम (1990) :- मनावर तहसील धार जिले के आदिवासी छात्रों की शैक्षिक प्रगति में पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिससे निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि छात्रों के जीवन में प्रमुख कठिनाई उनकी निम्न आर्थिक समस्या की कमी तथा भाषा में कठिनाई रही है।

भटनागर जैन (1993) -

इन्होने शिलांग एवं आस-पास के आदिवासी हाईस्कूल के विद्यार्थी के घर की पृष्ठभूमि चुनिंदा मनोवैज्ञानिक शैक्षिक उपलब्धी व्यवायीक योजना चरों का अध्ययन किया।

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आंकाक्षा में सार्थक अंतर पाया गया।
2. आदिवासी विद्यार्थी कि शैक्षिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा से कम थी।

सचिदानन्द (1974) :- आदिवासी एवं गैर-आदिवासी विद्यार्थी कि व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए। विद्यालय में बढ़ने वाले आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा, गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा से कम थी।

लखोबा (1986) प्रभालचंद्र (1989) :- इन्होंने आदिवासी क्षेत्र के समस्या एवं उपायों का अध्यययन किया। आदिवासी को उपलब्ध शैक्षिक अवसरों का अध्ययन किया लखोबा के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि

आदिवासी छात्राओं को छात्रों की तुलना में गृहकार्य करने में अधिक समस्या होती है। तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का अध्ययन में कमी का मुख्य कारण इनके शिक्षा के पिछड़ेपन, पालकों की शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और प्रेरणा की कमी है।

गौतम रजनी (1990) :- आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्रों का सृजनात्मक मुख्य शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया जातिभेद, लिंगभेद और विषय सूची में शैक्षिक उपलब्धि के अंकों में सार्थक अंतर पाया गया।

चन्द्रर प्रभाव (1990) :- हाईस्कूल के आदिवासी छात्रों की शिक्षा और व्यवसायिक सूची में बुद्धि लब्धी शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में सम्बन्धों का अध्ययन किया निष्कर्ष में पाया गया कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों कि तुलना में उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर के छात्रों के प्राप्तांक समित और शिक्षण में ज्यादा तथा तकनीकी और व्यावसायिक सूची में कम है। उच्च सम्बन्धी स्तर के आदिवासी छात्रों की वैज्ञानिक व्यवसायिक सूची में कम है। उच्च उपलब्धि स्तर के आदिवासी छात्रों की वैज्ञानिक व्यावसायिक सूची निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में ज्यादा है।

दास सोहनी पनायें भमेन्दर (1993) :- स्तर एक व स्तर दो की क्षमतायें उसका अलाभन्वित बच्चों पर उनकी शैक्षिणिक उपलब्धियों का संबंध पर अध्ययन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च जाति की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न जाति से अधिक है।

राय के.बी. सक्सेना (1995) :- विद्यार्थी तथा विद्यालय स्तर के घरों का अनुसूचित जाति एवं जनजाति की उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया

जिसमें पाया गया कि अभिभावकों के सक्रीयता और जागरूकता से अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों की उपलब्धि बढ़ सकती है।

गर्ग अश्वनी कुमार (2000) :- आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण अध्ययन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि परिवार के व्यवसाय का सार्थक प्रमाण दिखाई देना है।

2.9 विदेशों में हुए शोध कार्य :-

बर्न्सटिन (1962) :- आदिवासी भाषा संबंधी समस्या का अध्ययन किया और पाया की छोड़ो कक्षा में बच्चों पर उनकी घरेलू भाषा का आर्थिक असर पड़ता है। इसके लिए शिक्षकों को क्षेत्रीय भाषा का सहारा होना चाहिए।

कोलमेल प्रतिवेदन (1966) :- शिक्षा के अवसरों की समानता के विचार को लेकर एक गहन महत्वपूर्ण अध्ययन संयुक्त राष्ट्र अमेरिकायें कोलमेन द्वारा किया जो एक प्रतिवेदन के रूप में सन् 1966 में प्रकाशित हुआ इसके अध्ययन का आधार नागरिक अधिकार नियम1964 की धारा 402 के अंतर्गत किए गए प्रावधान से संबंधित था जिसके अनुसार शैक्षिक समानता के अवसरों को धर्म जाति वर्ग आदि को किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होना चाहिए।

इग्लैण्ड की प्लाउडन रिपोर्ट (1967) :-

शैक्षिक अवसरों की समानता को लेकर इग्लैण्ड में कुछ प्रयास किये गये इसमें प्लाउडन समिति के प्रतिवेदन की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही 1967 में इग्लैण्ड की केन्द्रिय शैक्षिक सलाहकार समिति के प्रतिवेदन को प्लाउडन ने प्रतिवेदन अथवा बच्चे व प्राथमिक विद्यालय की प्लाउडन ब्रिमेर प्लाउडन थी। रिपोर्ट में विभिन्न प्रकार के सामाजिक वातावरण कक्षा के अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्र के अनुपात का गहन अध्ययन किया और यह शिकायत किसी की छात्र और शिक्षक का अनुपात 1:30 होना चाहिए। उसमें यह भी सुझाव दिया गया कि बच्चें को आठ वर्ष की आयु में विद्यालय में प्रवेश दिया जाना चाहिए। इस

प्रतिवेदन का अनेक स्थानीय संस्थानों ने अपना लिया। प्लाउडन प्रतिवेदन छात्रों एवं शिक्षकों की स्वतंत्रता को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है।

कैन्टयी एम डी और बेन्सटन (1968) :- ने पाया कि आदिवासी का पिछड़ा होना उनमें शिक्षा का प्रसार न हो माना है। आवश्यकता उनमें स्वतः को जागृत करने की है। जिससे उन्हें परिधि से केन्द्र कि और लाया जा सकें।

सेग टी (1971) :- सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यावसायिक अकांक्षा व शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन से प्रमुख निष्कर्ष यह निकला कि सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यावसायिक आकांक्षा व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध होता है।

बिनमड (1972) :- ने सामाजिक आर्थिक स्तर ओर अपेक्षित व्यवसाय में सम्बन्ध का अध्ययन किया अध्ययन से प्रमुख निष्कर्ष निकले कि जितना सामाजिक आर्थिक

प्रेन्टर और स्टूटा (1974) :- इन्होंने बुद्धिलब्धी और व्यावसायिक आकाक्षा में संबंध का अध्ययन किया अध्ययन से निष्कर्ष निकले की उच्च बुद्धिजीवी और उच्च कक्षा निष्पत्ति का उच्च व्यावसायिक आकांक्षा और उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से धनात्मक सहसंबंध है।

स्तर उंचा होगा उतना ही अपेक्षित व्यवसाय का स्तर उंचा होगा।

कोलमेन द्वारा एक बड़े पैमाने पर विद्यालयों एवं छात्रों के सामाजिक वातावरण के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया गया एवं विद्यालयीन शिक्षा का गुणात्मक रूप से प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया गया।

उपरोक्त अध्ययनों से यह पाया जाता है कि शैक्षिक उपलब्धी का सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है। निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के आदिवासी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है और उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती हैं।